ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-6* Issue-12*January- 2022
Innovation The Research Concept

पातालकोट के विकास में भारिया जनजाति की महिलाओं का योगदान

Contribution of Women of Bharia Tribe in the Development of Patalkot

Paper id: 15651 Submission: 11/01/2022, Date of Acceptance: 21/01/2022, Date of Publication: 23/01/2022

प्रतिश्रुति बघेल
शोधार्थी,
राजनीति विज्ञान,
बरकतउल्ला विश्वविद्यालय
भोपाल, मध्यप्रदेश, भारत

सारांश

मध्य प्रदेश का एक जिला छिंदवाड़ा जो कि सतपुड़ा की पर्वत श्रेणियों से घिरा और हरे-भरे जंगलों के बीच बसा हुआ है। छिंदवाड़ा से लगभग 90 किलोमीटर की दूरी पर एक प्राकृतिक गर्भ ग्रह स्थित है जिसे हम पातालकोट कहते हैं यह समुद्र तल से लगभग 32 से 50 फुट की ऊंचाई पर बसा है इस की तलहटी में 1200 ऊंची पर्वत श्रेणियां है जहां प्राचीन काल से लगभग 500 वर्ष पूर्व से आदिवासी जनजाति के लोग निवासरत है, जिसमें भारिया जनजाति के लोग भी हैं । भारिया जनजाति की महिलाओं का समाज के आर्थिक, सामाजिक एवं धार्मिक विकास में प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से बहुत बड़ा योगदान रहता है किंतु यह दृष्टिगत नहीं होता यह महिलाएं पुरुष वर्ग से कमतर नहीं है यह महिलाएं गृह संचालन के साथ साथ समाज को भी संचालित करती है। आदिवासी की भारिया महिलाएं अपने स्वतंत्र व्यक्तित्व की पहचान कर पाने में सक्षम है तथा समाज को एक नई दिशा देने में समर्थ है।

Chhindwara, a district of Madhya Pradesh, which is surrounded by the mountain ranges of Satpura and is situated amidst lush green forests. At a distance of about 90 kilometers from Chhindwara, there is a natural womb planet, which we call Patalkot. It is situated at an altitude of about 32 to 50 feet above sea level. There are 1200 high mountain ranges at the foot of this, where people of tribal tribes have lived since ancient times, about 500 years ago. In which there are people of Bharia tribe, women of Bharia tribe contribute a lot directly and indirectly in the economic, social and religious development of the society, but it is not seen that these women are not less than men. These women run the household as well as run the society. Tribal stripes women are able to identify their independent personality and are able to give a new direction to the society.

मुख्य शब्द: आदिवासी जनजाति, स्वावलंबी, आत्मनिर्भर महिलाएं प्रशासन, प्रतिनिधित्व।
Keywords: Tribal tribes, self-supporting, self-reliant women Administration, Representation.

प्रस्तावना

सिर पर लकड़ियों का गट्ठर रखे हुए दूर कहीं जाती एक स्त्री मानो कोई पेंटिंग जीवंत हो उठी हो लेकिन जैसे-जैसे हम निकट आते जाते हैं, सत्यता कुछ और ही सामने आती जाती है। किसी क्षेत्र में किसी खास परिस्थिति में चलने वाला स्त्री संघर्ष एकमात्र सार्वभौमिक सत्य नहीं हो सकता, प्रेरणास्रोत भी हो सकता है। हर क्षेत्र का अपना एक अलग बुनियादी सामाजिक ढांचा होता है। जनजातीय विकास को दृष्टिगत रखते हुए इन क्षेत्रों में कई विकास योजनाओं को लागू किया जाता है। किंतु प्रशासनिक तंत्र में इच्छाशक्ति की कमी होने के कारण यह योजनाएं सफल नहीं हो पाती। परिवार उन्मुखी कार्यक्रमों को दी गई आर्थिक सहायता भी इन्हें गरीबी रेखा से ऊपर लाने में अपर्याप्त सिद्ध हुई है। इन भारियाओं में अभी भी अधिकांश निरक्षर ही है और सिर्फ गुजारे की अर्थव्यवस्था पर जी रहे हैं भारिया जनजाति एक ऐसी जनजाति है जहां महिलाएं अपनी हैसियत से अधिक जिम्मेदारियों का बोझ लादे जीवन यापन करने को मजबूर हैं वह निरंतर संघर्षरत हैं पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक सभी क्षेत्रों में निडर, साहसी, मेहनती, ईमानदार होते हुए भी एक दर्दनाक अंधकारमयअस्तित्व से जूझ रही है। इसका कारण सिर्फ उनकी अज्ञानता तथा प्रशासन की उपेक्षा है।

अध्ययन विधि

यह शोध पातालकोट की भारिया जनजाति की महिलाओं की सक्षमता को दृष्टिगत रखते हुए किया गया है। हमने पाया कि भारिया महिलाएं प्रायोगिक है, कर्म पर विश्वास करती है, बातों पर नहीं सर्वेक्षण विधि द्वारा महिलाओं से संपर्क साधा गया। उन्हें समूहों में एकत्रित करके उनके अंदर छुपी हुई विशेषताओं से अवगत कराया गया। प्रश्नोतर विधि के माध्यम से उनकी समस्याओं को सुना गया तथा समाधान बताया गया।

धार्मिक विकास

भारिया जनजाति की महिलाएं बहुत धार्मिक होती हैं। आदिवासी जनजाति वैसे भी सीधे प्रकृति से जुड़े होते हैं। यह विश्व की एकमात्र जनजाति है जो प्रकृति की पूजा करते हैं वृक्षों को यह देव स्वरूप मानते हैं। उसी प्रकार पहाड़ों एवं नदियों की भी पूजा करते हैं । विवाह हो, जन्मोत्सव हो या अन्य उत्सव ये वृक्षों की पूजा करते हैं। इसी तरह इनका धार्मिक विकास होगा तो आर्थिक सुदृढ़ता स्वतः ही आ जाएगी।

देववृक्ष

साज ,बीजा ,बरगद ,पारस पीपर , औदुम्बर,खैर,पलाशआदि वृक्षों को यह देव वृक्ष मानते है। भारिया जनजाति की महिलाएं इन वृक्षों को सुरक्षित कर पर्यावरण को सुरक्षित कर सकती हैं। इन वृक्षों को सहेज कर रखने से इनका धार्मिक वातावरण विकसित होगा। इनके बच्चों को यह प्रेरणा मिलेगी कि वृक्षों को काटना नहीं है और ना किसी को काटने देना है। इन वृक्षो से जो सकारात्मक ऊर्जा का प्रवाह होगा वह उनके आसपास के वातावरण को शुद्ध तथा ऊर्जावान बनाएगी।

धर्म के प्रति आस्था बढ़ने से पेड़-पौधों वृक्षों के प्रति उनका लगाव बढ़ेगा। आने वाली पीढ़ी भी इनका अनुसरण करेंगे। जिससे जंगल, जल ,जीवन और जनजाति सुरक्षित होंगे, पर्यावरण संरक्षित होगा। जलवायु प्रभावित होगी तो वर्षा अच्छी होगी ,नदियों में सदा जल रहेगा ,खेती अच्छी होगी, पैदावार बढ़ेगी और इनका जीवन सुचारू रूप से चलेगा। वृक्षों की रक्षा, परिवार की रक्षा और समाज की रक्षा। साथ ही जल भी संग्रहित होगा। नदियों के तटों पर लगे पेड़ों की कटाई रुकेगी तो नदियों में पानी रहेगा। पेड़ मिट्टी के कटाव को तो रोकेंगे ही साथ ही नदी के पानी को सूखने नहीं देंगे ।नदियों में पानी रहेगा तो आने वाले समय में पीने के पानी की समस्या नहीं होगी जो कि आने वाले समय में होने वाली है।

नदियों में पानी रहेगा तो खेती करना आसान होगा, सिंचाई की सुविधा होगी, जानवरों को पानी मिलेगा फसलों को भरपूर पानी मिलेगा।

जलवायु

जलवायु पर्यावरण के ताप और दाब पर निर्भर करती है। पर्यावरण के संतुलन के लिए प्रकृति के ताप और दाब का नियंत्रण आवश्यक है इसलिए यह नियंत्रण बनाए रखने के लिए जंगलों का हरा भरा रहना जरूरी है, पहाड़ों के कटाव को रोकना आवश्यक है। इसी तरह इनका धार्मिक विकास होगा तो आर्थिक सुदृढ़ता स्वतः ही आ जाएगी।

आर्थिक विकास

पातालकोट के भारिया जनजाति के परिवारों में महिलाएं ही पूरे परिवार की धुरी होती है । वह अकेली ही पूरे परिवार का ध्यान रखती हैं। मर्द घर पर ही महुआ की शराब पीकर पड़े रहते हैं। महिलाएं खेत पर जाती हैं ,खेती का सारा काम करती हैं। निंदाई, गुडाई, सिंचाई, बगाई, कटाई आदि। वे जंगल जाती हैं। लकड़ी काटकर गट्ठर बनाकर सिर पर लादकर लाना, भोजन पकाना बच्चों को संभालना उनका पालन पोषण करना । इतना सब कुछ करके भी वे अपने आप को सुखी बनाने में सक्षम है। जरूरत है कि वह अपनी ताकत को समझें। इनकी आर्थिक स्थिति अच्छी न होने के कारण परिवार में छोटे-मोटे लड़ाई झगड़े होते रहते हैं। बच्चों को भरपेट भोजन नहीं मिलता जिस कारण बच्चे कभी-कभी कुपोषण के शिकार भी हो जाते हैं। पर्याप्त भोजन ना मिल पाने के कारण उनकी शारीरिक बनावट भी कमजोर दिखाई देती है। न लंबाई बढ़ती है न ही ये तंदुरुस्त दिखाई देते हैं।महिलाएं भी कमजोर ही दिखाई देती है। गर्भवती होने पर उन्हें संतुलित भोजन नहीं मिल पाता, हालांकि कोदो कुटकी तो अमृत आहार है किंतु ये उतने चाव से नहीं खाती हैं। बच्चा पैदा होने के बाद ये महिलाएं अत्यंत ही कमजोर दिखाई देती हैं। स्वस्थ होने में उन्हें काफी समय लगता है। एक दूध पिलाने वाली माता को भरपूर मात्रा में संतुलित और पौष्टिक आहार की आवश्यकता होती है जो इन्हें नहीं मिल पाता है।यदि ये महिलाएं स्वयं को आर्थिक रूप से विकसित कर लेंगी तो वे उन सभी वस्तुओं को प्राप्त कर सकती हैं, जिनकी आवश्यकता उन्हें है, जैसे भरपेट भोजन,अच्छे वस्त्र,बच्चों के पालन-पोषण की आवश्यक सामग्री,अच्छी शिक्षा, अच्छा स्वास्थ्य व मनोरंजन आदि।

पातालकोट के जंगलों में आम,आंवला,अचार,हर्रा,बहेड़ा,जामुन,बेर,महुआ के वृक्ष बहुतायत में पाए जाते हैं।इन्हीं वृक्षों के माध्यम से ये महिलाएं अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बना सकती हैं, और अपने परिवार समाज व पातालकोट का आर्थिक विकास कर सकती हैं। साथ ही एक वृहद योगदान आर्थिक विकास में दे सकती है।

जैसे - आम का अचार बनाकर,आम की खटाई बनाकर, आम का मुरब्बा, आम की रोटी, मीठा अचार बनाकर बेच सकती हैं। आम की गुठली फोड़ कर बेच सकती हैं।

आंवला

आंवले का मुरब्बा, आंवले का अचार, कैंडी सुपारी बनाकर बेच सकती है।

हर्रा,बहेड़ा की सुपारी बनाकर बेच सकती है। अचार बीजी की पट्टी, बर्फी दाने बेच सकती है। लड्डू बनाकर बेच सकती है। जामुन- पके जामुन तथा गुठली सुखाकर, पाउडर बनाकर बेच सकती है।

बेर

बेर के अचार, उबले बेर, बोर कुट, मुरब्बा, सूखे बेर बनाकर बेच सकती हैं।

माहुल

दोने पत्तल बनाकर बेच सकती हैं।

कोदो

कुटकी के चावल बनाकर बेच सकती है।
उपरोक्त सभी प्रकार के खाद्य सामग्री तथा दोने पतल बेचकर वे अपनी आर्थिक स्थिति मजबूत कर सकती हैं।
वर्तमान समय में कुछ स्वार्थी दलाल इन तक पहुंचकर इनके बेशकीमती वनपज उनसे बहुत ही कम दामों में (यूं कहा जाए कि सोने को माटी मोल खरीदना) खरीदकर बाजार में अधिक दामों में बेचकर स्वयं बहुत ज्यादा मुनाफा कमाते हैं परंतु ये भोले-भाले ग्रामीणों को कुछ भी नहीं मिलता है। यदि प्रशासन इनकी थोड़ी भी मदद करें तो यह स्वयं ही अपनी फसल व वनोपज से अपनी अर्थव्यवस्था को मजबूती प्रदान कर सकते हैं,दलालों के हाथों मूर्ख बनने से बच सकते हैं।
वर्तमान समय में **कोरोना** काल में म.न.रे.गा का काम मिला, वहाँ भी काफी संख्या में महिलाएं ही काम करती दिखी पुरुष सिर्फ 2% ही दिखे।

सामाजिक व राजनैतिक

विकास भारिया जनजाति को सबसे पिछड़ी जनजाति के रूप में जाना जाता है। इसका बहुत बड़ा कारण शासन प्रशासन का इस समाज की तरफ ध्यान ना देना शायद इन्हें अनदेखा करना है। यह जनजाति सबसे पिछड़ी नहीं अपितु सबसे आधुनिक,आत्मनिर्भर, स्वावलंबी व दूसरों के लिए एक प्रेरणास्त्रोत है। इनके विकास की तकनीक इन्हीं के अंदर छुपी हुई है किंतु अज्ञानता व भोलेपन के कारण ये अपनी ही विशेषताओं से अनभिज हैं और गरीबी तथा पिछड़ेपन के साथ जीवन यापन कर रहे हैं। जिसका नाजायज फायदा कुछ स्वार्थी व गलत व्यक्ति उठा रहे हैं। यदि ये थोड़े से सतर्क व चौकन्ने हो जाए तो तथाकथित दलालों के चंगुल से बच पाएंगे व सामाजिक और राजनैतिक रूप से विकसित हो पाएंगे। इस विकास में भारिया जनजाति की महिलाएं बड़ा योगदान दे सकती हैं। स्वयंवर प्रथा इनमें आज भी है लड़कियां स्वयं अपनी पसंद का वर चुन सकती हैं। तथा विवाह में वरपक्ष वधुपक्ष को भेंट देते हैं। ये लोग बेटा-बेटी में अंतर नहीं करते।घरेलू हिंसा इनके परिवारों में बहुत ही कम पाई जाती है। इनके परिवार पुरुष प्रधान नहीं अपितु महिला प्रधान होते हैं। सभी पारिवारिक सामाजिक व जातिगत कार्यक्रमों में महिलाएं बढ़-चढ़कर हिस्सा लेती है। कोई भी फैसला परिवार की सबसे बुजुर्ग महिला लेती है वह जैसा कहेंगी वैसा ही होगा । परिवार के सभी सदस्य बच्चे,बड़े,जवान सभी उनकी बातों को मानते हैं। उनके फैसले के विरोध में जाने की हिम्मत कोई नहीं करता । इनका पूरा समाज मिलजुल कर रहता है। सुख दुख में तीज त्यौहार हो या उत्सव,इतने संयम होते हुए भी वे पिछड़े हुए हैं। ऐसा हम मानते हैं। ये अपने जीवन से संतुष्ट हैं सुखी हैं। छल कपट लड़ाई झगड़े से दूर राजनीतिक षड्यंत्र से दूर शांत व भोले-भाले लोग द्य उनके भोलेपन का फायदा कुछ राजनीतिक लोग भी कई वर्षा से उठा रहे हैं । चंद पैसों का लालच देकर उन्हें बरगलाकर अपने इशारों पर नचाते हैं। भारिया जनजाति की महिलाएं यदि निडर होकर स्वयं आगे आकर अपने समाज का नेतृत्व करेंगी तो वे निश्चित रूप से सामाजिक व राजनीतिक विकास कर सकती हैं।

ग्राम पंचायत के चुनाव में महिलाएं खड़ी होकर चुनाव लड़ सकती हैं। अपनी बात को बेबाक होकर कह सकती हैं।जो भी इनकी आवश्यकताएं हैं, गांव में जो भी कमियां हैं। जैसे स्वास्थ्य, शिक्षा, भूमि, भवन राशन, मनोरंजन आदि समस्याओं को प्रशासन को अवगत करा सकती हैं। पारिवारिक प्रतिनिधित्व के साथ-साथ ये महिलाएं सामाजिक व राजनीतिक प्रतिनिधित्व करने में भी सक्षम है। यदि भारिया जनजाति की महिलाएं इन क्षेत्रों में आगे आती हैं तो निःसंदेह हर क्षेत्र में इनका विकास होना निश्चित हैं।

लक्ष्य

इस शोध के माध्यम से पातालकोट की भारिया जनजाति की ओर राजनेताओं का ध्यानाकर्षण करना ताकि उनका सर्वांगीण विकास हो।

अध्ययन का उद्देश्य

पातालकोट की भारिया जनजाति के नेतृत्व को खोजना तथा नेतृत्व के माध्यम से जनजाति को समाज की मुख्य धारा से जोड़ना ताकि वे गुमनामी के अंधेरे से बाहर आकर अपना विकास कर सकें॥

निष्कर्ष

जिस दिन महिलाएं अपने अस्तित्व को सही रूप में समझ जाएंगी उस दिन से विकास की दिशा ही बदल जाएगी। दोहरा जीवन यापन करने वाली ये भारियां महिलाएं वास्तव में धन्य है। न्यूनतम सुविधाओं में भी इनमें अभूतपूर्व जिजीविषा है अदम्य साहस असीमित संचालन शक्ति भरपूर कार्य क्षमता इनकी विशेषताएं हैं। धार्मिक, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, पारिवारिक सभी क्षेत्रों में ये अपना योगदान दे रही है। प्रशासन एवं सामाजिक संस्थाए यदि थोडा सा सहयोग प्रदान करेंगे तो ये महिलायें विकास की नई इबारत लिख देंगी तथा भारिया जनजाति की पहचान को बनाए रखेंगी।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *Sharma,R. and Roy,J(2016) 'Socio-economic and demographic characteristics of three most backward tribes of Madhya Pradesh',Tribal Health Bulletin, 23(1),pp,77-87. Available at : https://www.researchgate.net/publication/309476374_Socio-economic_and_demographic_chractersitics_of_three_most_backward_tribes_of_madhya_pradesh.Sahani.*
2. *R. and Nandy,S.K.(2015)'Particularly vulnerable tribal groups of India: an overview',"Journal of the Anthropological survey of India,62(2),pp.851-865. Available at: http://www.researchgate.net/publication/262012652.*
3. *Aiyappan,A.(1965) 'Some Patterns of Tribal Leadership',the Economic Weekly.Commissioner,C.(2013)'Primary census Abstract',pp. 1-40.Fokwang,J.(2005)*
4. *Tribal innovators Traditional Leadership and Development in Africa',Codesria Bulletin,Nos.3&4,pp.41-43.*
5. *Kahlon,L.K and Singh,R. (2020) 'Current status of Biocultural Knowledge of Paudi Bhuyan, a particular vulnerable tribal group(PVTG) in northern Odisha, India Current status of biocultural knowledge of Paudi Bhuyan ,a particularly vulnerable tribal group(PVTG) in Northern Odisha(April).*
6. *Pradesh,G. of M.(2007),'Madhya Pradesh Human Development Report 2007'. Available at: http://www.undp.org/content/dam/india/docs/human_development_report_madhya_pradesh_2001_full_report_.pdf.Tiwari,M.K. et al.(2007).*
7. *Growth and Nutritional status of the Bharia-A primitive tribe of Madhya Pradesh' collegiums anthropologicum,31(1),pp.95-101.*